International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.in
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 74-78

रीवा संभाग में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की आत्मसंप्रत्य एवं उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

[1] पुष्पराज सिंह [2] डॉ. जय सिंह

[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

शिक्षण एक स्वयं में अति विस्तृत क्षेत्र है तथा अनुसन्धान किसी समस्या के समाधान के लिए चरणबद्ध पद्धति से किया जाने वाला प्रयास है। वहीं शैक्षिक अनुसन्धान से मूल प्रश्नों का समाधान किया जा सकता है तथा इसके परिणामस्वरूप नवीन ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है। निश्चय ही शैक्षिक अनुसन्धान अन्य सामाजिक तथ्यों से पृथक है क्योंकि अन्य सामाजिक विषयों के अनुसन्धान में नवीन ज्ञान की वृद्धि को ही महत्व दिया जाता है जबकि शैक्षिक अनुसन्धान में वृद्धि के साथ–साथ उसकी उपयोगिता का होना भी अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार शैक्षिक अनुसन्धान के अन्तर्गत शिक्षा के क्षेत्र में नवीन विषयों अथवा तथ्यों की खोज नवीन सिद्धांतों तथा सत्यों का क्रियान्वयन किया जाता है। इस शोध पत्र के माध्यम से शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की आत्मसंप्रत्यय एवं उनकी उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति तथा उनमे आने वाली कठिनाइयों का आंकलन किया गया है। शोध क्षेत्र में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्मसंप्रत्यय का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है और शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में भी कोई सार्थक अन्तर नही है।

मूल शब्दः रीवा संभाग, शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय, छात्र, आत्मसंप्रत्यय एवं शैक्षणिक उपलब्धि।

प्रस्तावना

शिक्षा बालक का सार्वांर्गीण विकास करके उसे तेजस्वी, बुद्विमान चरित्रवान, विद्वान तथा वीर बनाती है, उसी प्रकार दूसरी ओर शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी एक आवश्यक तथा शक्तिशाली साधन है दूसरे शब्दों में व्यक्ति की भाँति समाज भी शिक्षा के चमत्कार से लाभान्वित होता है शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदर्शो, आशाओं, आकांक्षाओं, विश्वासों तथा परम्पराओं आदि सांस्कृतिक सम्पत्ति को इस प्रकार से हस्तान्तरित करता है कि उनके हृदय में देश–प्रेम तथा त्याग की भावना प्रज्वलित हो जाता है। जब ऐसी भावनाओं तथा आदर्शों से भरे हुए बालक तैयार होकर समाज अथवा देश की सेवा का व्रत धारण करके मैदान में निकलेंगे तो समाज भी निरन्तर उन्नति के शिरवर पर चढ़ता ही रहेगा। इस प्रकार व्यक्ति तथा समाज दोनों ही के विकास में शिक्षा परम् आवश्यक है।

शिक्षा का महत्व अनेक दृष्टियों से हैं। इसका कार्यक्षेत्र इतना व्यापक है कि इसके अन्तर्गत वे सभी कार्य आ जाते हैं जिनका पूरा करने से व्यक्ति अपने जीवन को सुखी तथा सफल बनाते हुये सामाजिक कार्यो को उचित समय पर पूरा करने के योग्य बन जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि सामान्य रूप से शिक्षा व्यक्ति की मूल प्रवृत्तियों का नियन्त्रण मार्गान्तीकरण तथा शोधन करते हुये उसकी जन्मजात शक्तियों के विकास में इस प्रकार सहायता प्रदान करती है कि उसका सर्वांगीण विकास हो जाय। यही नहीं, शिक्षा व्यक्ति में चारित्रिक तथा नैतिक गुणों एवं सामाजिक भावनाओं को विकसित करके उसे प्रौढ़ जीवन के लिये इस प्रकार तैयार करती है कि वह अपनी संस्कृति तथा सभ्यता का संरक्षण करते हुये उत्तम नागरिक के रूप में सामाजिक सुधार करके राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये अपने प्राणों की आहुति देने में तनिक भी नहीं हिचकिचाता। संक्षिप्त रूप से शिक्षा मानवीय जीवन में व्यक्ति को जहाँ एक और वातावरण से अनुकूल करने तथा उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन करते हुए भौतिक सम्पन्नता को प्राप्त करने चरित्रवान, बुद्धिमान, वीर तथा साहसी उत्तम नागरिक के रूप में आत्मनिर्भर बनाकर उसका सर्वांगीण विकास करती है वहीं दूसरी ओर शिक्षा राष्ट्रीय जीवन में व्यक्ति के अन्दर राष्ट्रीय अनुशासन आदि भावनाओं को विकासित करके उसे इस योग्य बना देती है।

शिक्षा जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा का आधार है। श्रेष्ठ शिक्षा जीवन को उन्नत बनाने की प्रेरणा देती है। मानवमूल्यों की रक्षा, प्रतिष्ठा एवं सम्वर्धना भी शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। वास्तव में देखा जाय तो शिक्षा समाज में चलने वाली सतत् प्रक्रिया है, जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए बालक का सर्वांगीण विकास उसकी रूचियों, योग्यताओं एवं क्षमताओं के अनुकूल करने का प्रयास करती है। असल में शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों को न आधुनिकता की ऑधी में ढकेलने, न रूढ़िवादी परम्पराओं में, बल्कि उन्हें वाँछनीय–अवांछनीय, सही–गलत, न्याय–अन्याय के बारे में सोचने एवं फैसला करने में सक्षम बनाएँ।

- रविन्द्रनाथ टैगोर जी कहते हैं कि– ''शिक्षा का अर्थ मस्तिष्क को इस योग्य बनाना है, कि वह शाश्वत सत्य की खोज कर सके, उसे अपना बना सके, और उनको अभिव्यक्त कर सके।''
- महात्मा गाँधी जी ने कहा कि ''शिक्षा से मेरा तात्पर्य उस प्रक्रिया से है, जो बालक एवं मनुष्य के शरीर, आत्मा एवं मन का सर्वोत्कृष्ट विकास कर सके।''
- हजरत मोहम्मद साहब का विचार है कि ''जन्म से लेकर कब्र में पहुँचने तक ज्ञान की खोज करो।''

शिक्षा का लक्ष्य ज्ञान प्राप्ति है। ज्ञान के समान पवित्र और कुछ भी नहीं है। जीवन का लक्ष्य विद्या स्वयं अमृत है, शिक्षा आत्मसाक्षात्कार है। शिक्षा मनुष्य को सच्चरित्र और संसारोपयोगी बनाती है। इसीलिए तो स्वामी विवेकानन्द जी ने स्पष्ट ही कहा है कि *''जो विचार जीवन निर्माण, मनुष्य निर्माण तथा चरित्र निर्माण में सहायक हो, उन्हें ही शिक्षा की संज्ञा दी जा सकती है।''*

शिक्षण एक स्वयं में अति विस्तृत क्षेत्र है तथा अनुसन्धान किसी समस्या के समाधान के लिए चरणबद्ध पद्धति से किया जाने वाला प्रयास है। वहीं शैक्षिक अनुसन्धान से मूल प्रश्नों का समाधान किया जा सकता है तथा इसके परिणामस्वरूप नवीन ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है। निश्चय ही शैक्षिक अनुसन्धान अन्य सामाजिक तथ्यों से पृथक है क्योंकि अन्य सामाजिक विषयों के अनुसन्धान में नवीन ज्ञान की वृद्धि को ही महत्व दिया जाता है जबकि शैक्षिक अनुसन्धान में वृद्धि के साथ–साथ उसकी उपयोगिता का होना भी अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार शैक्षिक अनुसन्धान के अन्तर्गत शिक्षा के क्षेत्र में नवीन विषयों अथवा तथ्यों की खोज नवीन सिद्धांतों तथा सत्यों का क्रियान्वयन किया जाता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता :

अध्ययन के द्वारा शैक्षणिक दृष्टि से अल्प विकशित रीवा संभाग के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्रों की आत्मसंप्रत्य एवं उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की समीक्षा की जाएगी, वहीं दूसरी ओर इसमें आने वाली कठिनाइयों की जानकारी प्राप्त की जाएगी तथा इन्हें सशक्त बनाने के लिए अपने शोध कार्य में वास्तविक स्थिति का विश्लेषण कर सशक्त प्रभावी सुझाव प्रस्तुत कर सकेगा जिनका उपयोग न केवल शोध क्षेत्र में अपितु सम्पूर्ण देश में शिक्षा के विकास हेतु किया जा सकेगा।

3. शोध की परिकल्पनाएँ :

''परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ है पूर्व चिन्तन'' यह अनुसंधान प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है। अनुसंधान कार्य इस परिकल्पना के निर्माण और उसके परीक्षण के बीच की प्रक्रिया है। परिकल्पना के निर्माण के बिना न तो कोई प्रयोग हो सकता है, और न ही वैज्ञानिक विधि से अनुसंधान ही सम्भव है, परिकल्पना के आभाव में अनुसंधान कार्य उद्देश्यहीन क्रिया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियो के आत्मसंप्रत्यय का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

4. उद्देश्य :

- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की आत्मसंप्रत्यय का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की जानकारी प्राप्त करना।
- रीवा संभाग के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि ज्ञात करना।
- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के मार्ग में आने वाली समस्याओं व अवरोधों को ज्ञात करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन :

प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र रीवा संभाग है। इसके अन्तर्गत 4 जिले – रीवा, सतना, सीधी व सिंगरौली हैं। अतः संभाग अन्तर्गत स्थित शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

6. अध्ययन विधि :

प्रस्तुत शोध कार्य के संपादन हेतु शोधार्थी ने निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया है–

1 समान्तर माध्य –

संकलित प्रदत्तों के औसत मान को समान्तर माध्य कहते हैं।

समान्तर माध्य त्र प्रदत्तों का योग / प्रदत्तों की संख्या

शोधार्थी ने अपने शोध कार्य के संपादन हेतु समान्तर माध्य ज्ञात करने की लघु रीति का प्रयोग किया है।[1] इस विधि के अनुसार–

समान्तर माध्य या औसत $M = Am + \frac{\Sigma fd}{\Sigma f} \times i$

जहाँ $M =$ प्रदत्तों का औसत, $Am =$ कल्पित माध्य, $f =$ प्रदत्तों की आवृत्ति, $d = (x - Am)/i$ तथा $i =$ वर्गान्तर

मानक विचलन –

मानक विचलन $(\sigma) = \frac{i}{N}\sqrt{N \times \Sigma fd^2 - (\Sigma fd)^2}$

जहाँ $N = \Sigma f =$ आवृत्तियों का योग

2 t– परीक्षण –

(a) दो बड़े स्वतंत्र समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जॉच – जब प्रतिदर्षों का आकार 30 या 30 से अधिक होता है, तो उनके मध्यमानों की अंतर की जांच क्रांतिक अनुपात द्वारा की जाती है। क्रांतिक अनुपात की गणना निम्न सूत्र द्वारा की जाती है–

$C.R.$ या

$$t = \frac{M_1 \sim M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}}$$

जहाँ $M_1 =$ पहले का समान्तर माध्य

$M_2 =$ दूसरे का समान्तर माध्य

$N_1 =$ पहले समूह का आकार

$N_2 =$ दूसरे समूह का आकार

$\sigma_1 =$ पहले समूह का मानक विचलन

$\sigma_2 =$ दूसरे समूह का मानक विचलन

(b) दो बड़े स्वतंत्र समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जॉच – जब प्रतिदर्ष का आकार N का मान 30 से कम है तो ऐसे समूह को छोटा समूह कहते हैं। छोटे समूह में $C.R.$ के स्थान पर t की गणना की जाती है। t की गणना निम्नलिखित सूत्र द्वारा की जाती है–

$$t = \frac{M_1 \sim M_2}{\sqrt{\left(\frac{\Sigma d_1^2 + \Sigma d_2^2}{N_1 + N_2 - 2}\right)\left(\frac{N_1 + N_2}{N_1 N_2}\right)}}$$

जहाँ $\Sigma d_1^2 =$ प्रथम प्रतिदर्ष के प्रदत्तों के अपने मध्यमान से विचलनों के वर्गों का योग

[1] गुप्ता एस.सी.कपूर व्ही, के., फण्डामेन्टलऑफ स्टेटिस्टिक्स, सुल्तान चंद एण्ड संस (1992 संस्करण) 23 दरियागंज नई दिल्ली।

Σd_2^2 = द्वितीय प्रतिदर्ष के प्रदत्तों के अपने मध्यमान से विचलनों के वर्गों को योग

M_1 = प्रथम प्रतिदर्ष का समान्तर माध्य

M_2 = द्वितीय प्रतिदर्ष का समान्तर माध्य

N_1 = प्रथम प्रतिदर्ष का आकार

N_2 = दूसरे प्रतिदर्ष का आकार

न्यादर्ष का आकार 30 से कम होने पर $t-$ परीक्षण के लिए निम्नलिखित सांख्यिकीय सूत्र का भी प्रयोग किया जा सकता है।

जहॉ प्रतीकों के सामान्य अर्थ अर्थ हैं।

$$t = \frac{M_1 \sim M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1-1}+\frac{\sigma_2^2}{N_2-1}}}$$

समष्टि व प्रतिदर्श : इस अध्ययन की समष्टि में रीवा संभाग के 04 जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों से 10 ग्रामीण व 10 शहरी विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 160 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 बालक एवं 10 बालिकाएं कुल 1600 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से शोधार्थी ने अपने शोध के लिये चुना है।

7. शोध उपकरण :

शोधकर्त्ता ने शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय पर विद्यार्थियों के आत्मसंप्रत्यय एवं उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने हेतु डॉ. ए.के.पी. सिन्हा तथा डॉ. आर. पी. सिंह के द्वारा निर्मित Adjustment Inventory for School Students समायोजन मापनी का प्रयोग किया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में छात्रों की आत्मसंप्रत्यय एवं उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – ओल्पोर्ट, जी.डब्ल्यू (1937) [1] व खान, प्रो. एस. एच. और श्रीमती शुक्ला भट्टाचाय (1987) [2], कौल लोकेश (1998)[3], मूज, आर. (1964) [4], थोर्प, एल.वी. और सैमुलर, ए.एम. (1965) [5] .

9. प्रदत्त संकलन विधि

प्राथमिक तथ्य सामग्री के संकलन हेतु प्रत्यक्ष साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से एवं द्वितीयक तथ्य सामाग्री के संकलन हेतु दस्तावेजी अध्ययन स्त्रोतों यथ विभागीय वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन, पूर्ववर्ती अध्ययन व शोध रिपोर्ट व इंटरनेट व अखवारों के माध्यम से तथ्य संकलन कर शोधकार्य पूरा किया गया है।

10. रीवा संभाग का सामान्य परिचय

रीवा संभाग भारत के मानचित्र में 24°32′ उत्तरी अक्षांश तथा 81°24′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 1045 फिट है। इस नगर के दक्षिण–पूर्व की ओर बिछिया और दक्षिण–पश्चिम से आती हुई बीहर नदी है। रीवा संभाग पूर्व रीवा रियासत की राजधानी रहा है। 4 अप्रैल 1948 को रीवा स्टेट तथा बुन्देलखण्ड की 34 रियासतों को मिलाकर विन्ध्य प्रदेश का निर्माण किया गया था। उस समय इस नगर को नवनिर्मित प्रदेश की राजधानी बनने का गौरव प्राप्त हुआ था। 01 नवम्बर 1956 को जब मध्य प्रदेश का निर्माण हुआ तब इस नगर को सम्भागीय मुख्यालय का दर्जा प्राप्त हुआ।

11. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी क्रमांक – 1 : शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियो के आत्मसंप्रत्यय का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

वर्ग.अन्तराल (c-i)	0–10	10–20	20–30	30–40	40–50	50–60	60–70	70–80	80–90	90–100	योग
शासकीय	0	4	16	56	206	300	174	33	9	2	800
अशासकीय	3	7	18	62	278	266	133	27	5	1	800

सार्थक हेतु सारणी

छात्र समूह	छात्रों की संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	अनुपात
शासकीय	800	53.66	11.42	4.04
अशासकीय	800	51.34	11.56	

$d.f = (N_1-1) + (N_2-1)$
$= (800-1) + (800-1)$
$= 799 + 799$
$= 1598$

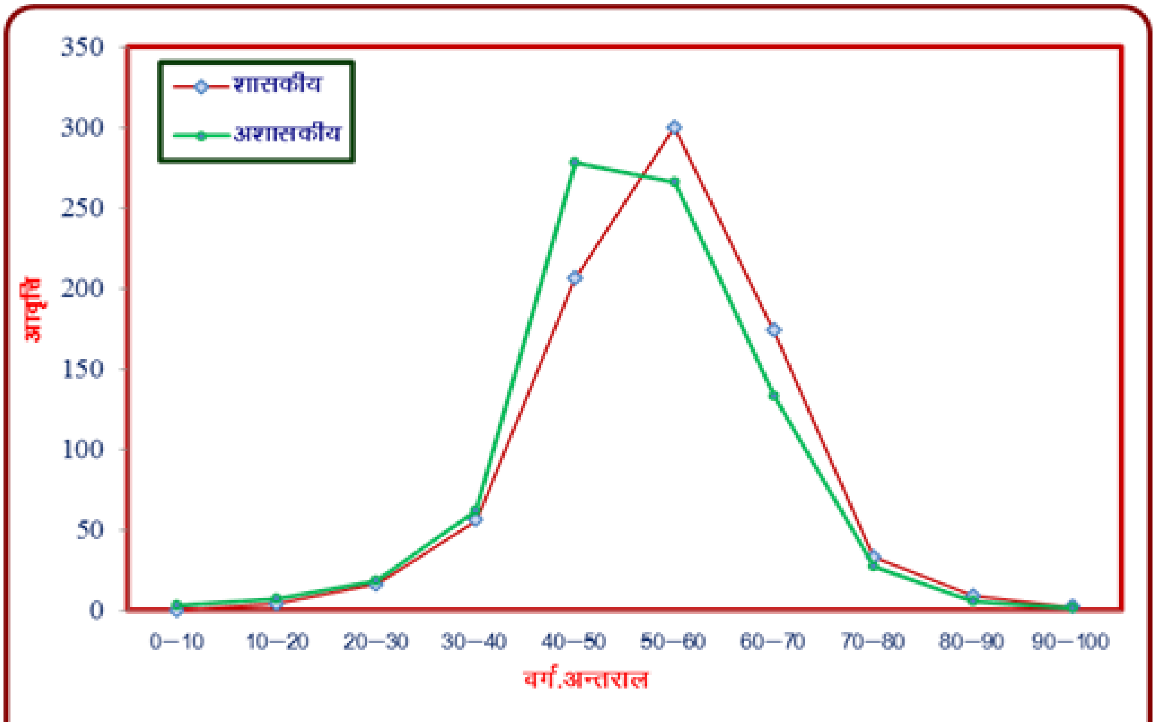

आरेख क्र. 1 : शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियो के आत्मसंप्रत्यय का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

विश्लेषण

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 मे न्यादर्श में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्मसंप्रत्यय का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी क्रमांक 1 मे संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालय के छात्रों के आत्मसंप्रत्यय का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव पर पड़ने वाले प्रभाव का औसत उपलब्धि 53.66 है तथा मानक विचलन 11.42 है। आसकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्मसंप्रत्यय का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का औसत उपलब्धि 51.34 है तथा मानक विचलन 11.56 है। शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्मसंप्रत्यय का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनो समूहों की औसत उपलब्धि मे अंतर की गणना से प्राप्त ज का मान 4.04 है।

व्याख्या

1598d.f. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान –1.59 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से अधिक है। अतः शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्मसंप्रत्यय का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में सार्थक अन्तर है।

अतः परिकल्पना निरसित होती है।

सारणी क्रमांक 2: शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन

वर्ग.अन्तराल (c-i)	0–10	10–20	20–30	30–40	40–50	50–60	60–70	70–80	80–90	90–100	**योग**
शासकीय	20	50	90	147	198	135	49	54	44	13	800
अशासकीय	18	47	82	145	201	122	66	56	47	16	800

सार्थक हेतु सारणी

छात्र समूह	**छात्रों की संख्या**	**सामान्तर माध्य**	**मानक विचलन**	**अनुपात**
शासकीय	800	48.16	15.71	2.05
अशासकीय	800	46.60	14.69	

$d.f = (N_1-1) + (N_2-1)$
$= (800-1) + (800-1)$
$= 799 + 799$
$= 1598$

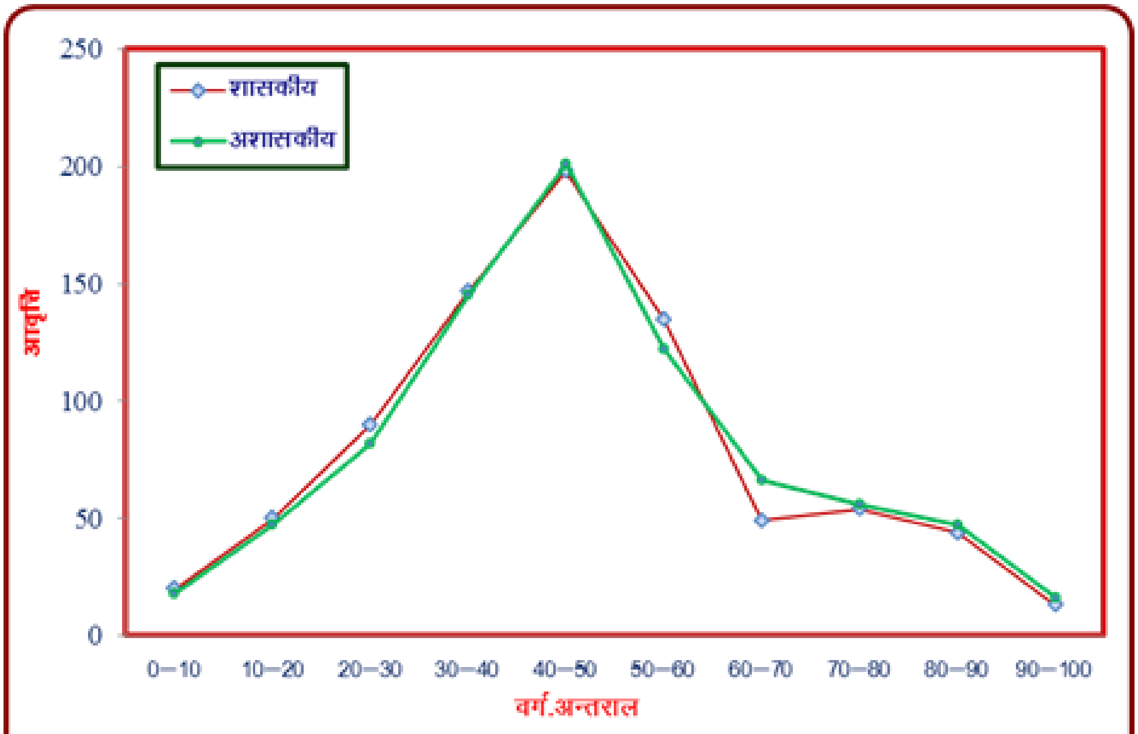

आरेख क्र. 2 : शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन

विश्लेषण

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी क्रमांक 2 मे संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव पर पड़ने वाले प्रभाव का औसत उपलब्धि 48.16 है तथा मानक विचलन 15.71 है। अशासकीय विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का औसत उपलब्धि 46.60 है तथा मानक विचलन 14.69 है।

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनो समूहों की औसत उपलब्धि मे अंतर की गणना से प्राप्त ज का मान 2.05 है।

व्याख्या

1598d.f. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान 2.05 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों के मध्य है। अतः शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

12. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि रीवा संभाग के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्मसंप्रत्यय का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है और शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव में भी कोई सार्थक अन्तर नही है।

13. संदर्भ

1. ओल्पोर्ट, जी.डब्ल्यू : 'व्यक्तित्व' ए साइकोलोजीकल इन्टरपरिटेशन, न्यूयार्क : हाल्ट, 1937.
2. खान, प्रो. एस. एच. और श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य, अध्यापकीय दर्शिका : परिवेशीय अध्ययन–कक्षा 1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली (भारत), 1987, पृष्ठ 44.
3. कौल लोकेश : शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली, 1998.
4. मूज, आर. : 'सोशल इकोलॉजी, मल्टी डाइमेन्सनल स्टडीज ऑफ ह्यूमन्स एण्ड ह्यूमन मिल्यूज इन हैम्बर्ग डी. एण्ड ब्रोडी, के (एडीटर्स) फ्रन्टीयर्स ऑफ साइकोलाजी, वोल्यूम 6, अमेरिकन हैण्डबुक ऑफ साइकियाट्री बेसिक बोर्डस, न्यूयार्क, 1964; पृ.– 355–365.
5. थोर्प, एल.वी. और सैमुलर, ए.एम. : 'पर्सनेल्टी एण्ड इन्टर डिस्सपलीनरी एपरोज' न्यूयार्क : एन ईस्ट–वेस्ट एड., 1965.